रबड़ समाचार

बुलेटिन

जनवरी-अप्रैल 2023

वह देश कौन-सा है

मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है,
सुख स्वर्ग-सा जहां है, वह देश कौन-सा है?
जिसका चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है?

नदियां जहां सुधा की धारा बहा रही हैं,
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन सा है?
जिसके बडे रसीले फल कंद, नाज, मेवे,
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है?

जिसमें सुगंध वाले सुंदर प्रसून प्यारे,
दिन-रात हस रहे हैं, वह देश कौन-सा है?
मैदान, गिरि, वनों में हरियालियां लहकतीं,
आनंदमय जहां है, वह देश कौन-सा है?

जिसकी अनंत धन से धरती भरी पडी है,
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है?
सबसे प्रथम जगत में, जो सभ्य था यशस्वी,
जगदीश का दुलारा, वह देश कौन-सा है?

पृथ्वी निवासियों को जिसने प्रथम जगाया,
शिक्षित किया, सुधारा, वह देश कौन-सा है?
जिसमें हुए अलौकिक तत्वज्ञ ब्रह्मज्ञानी,
गौतम, कपिल, पतंजलि, वह देश कौन-सा है?

छोड़ा स्वराज्य तृणवत्, आदेश से पिता के
वह राम थे जहां पर, वह देश कौन-सा है?
निःस्वार्थ शुद्ध प्रेमी भाई भले जहां थे,
लक्ष्मण-भरत सरीखे, वह देश कौन-सा है?

देवी पवित्रता श्री सीता, जहां हुई थीं,
माता-पिता जगत् का, वह देश कौन-सा है?
आदर्श नर जहां पर थे बाल ब्रह्मचारी,
हनुमान, भीष्म, शंकर, वह देश कौन-सा है?

विद्वान, वीर, योगी, गुरु राजनीतिकों के,
श्रीकृष्ण थे जहां पर, वह देश कौन-सा है?
विजयी, बली जहां के बेजोड शूरमा थे,
गुरु द्रोण, वीर अर्जुन, वह देश कौन-सा है?

जिसमें दधीचि दानी, हरिश्चंद्र, कर्ण-से थे,
सब लोक का हितैषी, वह देश कौन-सा है?
वाल्मीकि, व्यास ऐसे, जिसमें महान कवि थे,
श्री कालिदास वाला, वह देश कौन-सा है?

निष्पक्ष न्यायकारी जन जो पढ़े-लिखे हैं,
वे सब बता सकेंगे, वह देश कौन-सा है?
हैं कोटि-कोटि भाई सेवक सपूत जिसके,
भारत सिवाय दूजा, वह देश कौन-सा है?

- रामनरेश त्रिपाठी

चुने हुए राष्ट्रीय गीत से साभार

रबड़ बोर्ड

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
कोट्टयम - 686 002, केरल
पी बी नं.1122
दूरभाष : (0481) 2301231
फैक्स : 91 481 2571480
ई मेल : ol@rubberboard.org.in
वेब साइट : www.rubberboard.org.in

रबड़ समाचार बुलेटिन

जनवरी - अप्रैल 2023 *अंक 133*

अध्यक्ष
डॉ. सावर धनानिया

कार्यकारी निदेशक
डॉ. के एन राघवन आई आर एस

संपादक
जी सुनील कुमार
सहायक निदेशक (रा भा)

सहायक संपादक
एम श्रीविद्या
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

संपादन सहयोग
सिसिली पी एस
हिंदी सहायक

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से रबड़ बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है। बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक परिचालन के लिए।

लोग अपने कर्तव्य भूल जाते हैं लेकिन अपने अधिकार उन्हें याद रहते हैं।
- इंदिरा गांधी

मुख पृष्ठ :
राजभाषा सम्मेलन 2023
का उद्घाटन

इस अंक में

सावधानी से आगे बढें	4
राजभाषा सम्मेलन 2023	5-6
रबड़ अधिनियम 1947: प्लैटिनम जयंती समारोह का उद्घाटन	7-10
अनुवाद की समस्याओं का समाधान	11-12
राजेश अग्रवाल आई.ए.एस., अपर सचिव, वाणिज्य मंत्रालय ने रबड़ बोर्ड की गतिविधियों का मूल्यांकन किया	13-14
अधीनस्थ कार्यालयों को राजभाषा ट्रॉफी	15
आई आर एस जी का अध्यक्षपद भारत को	16
एक कदम स्वच्छता की ओर स्वच्छ भारत अभियान- परिणाम मेरी दृष्टि में	17-22
एम वसंतगेशन आई आर एस	18
अंधा कानून (कविता)	23
प्लैटिनम जयंती मूर्ति - 2023	24
प्लैटिनम जयंती प्रदर्शनी	25
केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद	26
हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी, बारिश (कविता)	27
कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 45वीं बैठक	28
संयुक्त हिंदी सप्ताह/संयुक्त हिंदी कार्यशाला	29
संयुक्त हिंदी सप्ताह - समापन समारोह	30-31
रसोई घर	31
सेवानिवृत्तियां	32
हिंदी प्रश्नोत्तरी	33
हिंदी दिवस समारोह	34-37
शरीर विज्ञान नोबेल पुरस्कार	38

सावधानी से आगे बढें

रबड़ की कीमतों के मामले में कृषकों को पिछले वर्षों की तुलना में अलग स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। इतने लंबे समय तक कीमतों का कम रहना आम बात नहीं है। अभी बाजार में जो मामूली बदलाव नजर आ रहा है, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है कि यह कितना बेहतर हो जाएगा। चूंकि टापिंग का मौसम अब समाप्त हो रहा है, कीमतों में वृद्धि से केवल उन कृषकों को लाभ होगा जो गर्मियों के दौरान टापिंग जारी रखते हैं।

मौसम में बदलाव का असर अभी से दिखना शुरू हो गया है। इस लेख को लिखे जाने तक, केरल में कई जगहों पर बारिश हुई होगी, खासकर दक्षिणी क्षेत्रों में। इस गर्मी के मौसम के दौरान अचानक बारिश से रबड के बागानों मे बीमारी का प्रकोप हो सकता है। कोरिनस्पोरा जैसे पर्णीय रोग पहले से ही उत्तरी केरल और कर्नाटक में कुछ बागानों को प्रभावित कर चुके हैं। आवश्यक निवारक उपाय करके ही वृक्षों के स्वास्थ्य को बनाए रखा जा सकता है।

उम्मीद की जानी चाहिए कि मौसम की अनिश्चितता बनी रहेगी। पेड़ों पर वर्षारक्षण किया जाना पडेगा। रबड टापर समूहों वाले रबड़ उत्पादक संघों को बोर्ड की सहभागी कंपनियों की मदद से वर्षारक्षण सामग्री की खरीद और भंडारण करके रखने पर, जब भी आवश्यक पडे, पेड़ों का वर्षारक्षण शुरू कर सकते हैं। इस बार वर्षारक्षण कर टापिंग करने वाले कृषकों के लिए टापिंग के दिनों की कमी नहीं हुई है। रबड़ के दाम कम रहने पर एक वर्ष की आय की गणना करते समय केवल उन्हीं किसानों को राहत मिलेगी, जिन्होंने बिना उत्पादन हानि उठाए टापिंग की है। यही कारण है कि हम हमेशा याद दिलाते है कि वर्षारक्षण जारी रखें।

समूह रबड़ प्रसंस्करण केंद्रों और रबड़ भंडारण सुविधाओं वाले संघ रबड़ की ई-विपणन प्रणाली से सीधे लाभान्वित हो सकते हैं। बोर्ड कंपनियों के माध्यम से विपणन करने वाले संघों को बेहतर मूल्य मिलता होगा। लेकिन, निजी क्षेत्र को सीधे रबड़ की आपूर्ति करने वाले संघ ई-मार्केटिंग प्रणाली से बहुत लाभान्वित हो सकते हैं। सीधे बेचने से बिचौलियों के शोषण से बच सकता है और कृषकों को सर्वोत्तम संभव कीमत मिल सकती है। केवल उत्पाद की गुणवत्ता का ध्यान रखना चाहिए। किसी भी संघ में कंप्यूटर ज्ञान रखने वाले किसी व्यक्ति की मदद से ई-विपणन में व्यापार कर सकता है।

रबड़ की कीमतों की बात हो या मौसम की, आगे एक ऐसी स्थिति है जहां कृषक को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। रबड़ की खेती के पूर्व अनुभव पर नजर डालने से पता चलता है कि किसान हमेशा ऐसी परिस्थितियों से बचे रहे हैं। अब जो कुछ किया जा सकता है वह यही है कि रखरखाव कार्यों को बाधित किए बिना रबड़ की खेती को बनाए रखना है।

शुभकामनाओं के साथ

डॉ. के एन राघवन आई आर एस
कार्यकारी निदेशक

राजभाषा सम्मेलन 2023

राजभाषा सम्मेलन 2023 का आयोजन भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान के सिल्वर जूबिली हॉल में दिनांक 15.02.2023 को बडे धूमधाम से किया गया। मलयालम के विख्यात कवि, गीतकार एवं वक्ता श्री राजीव आलुंकल सम्मेलन में मुख्य अतिथि थे। डॉ के एन राघवन आई आर एस, कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्रीमती पी सुधा, प्रभारी सचिव एवं निदेशक (प्रशिक्षण), श्री जोस जोर्ज, प्रभारी निदेशक (वित्त), डॉ जेस्सी एम डी, प्रभारी निदेशक (अनुसंधान), श्री जोणसण के जी, प्रभारी संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त, श्रीमती लिसी एम जे, प्रभारी संयुक्त निदेशक (सांख्यिकी एवं योजना) एवं श्री मात्यु ई ए, उप निदेशक (उत्पाद शुल्क) ने समारोह में आशीर्वचन दिए। श्रीमती पी सुधा, प्रभारी सचिव ने अपने स्वागत भाषण में बताया कि रबड़ बोर्ड में राजभाषा के रूप में हिंदी का सकारात्मक प्रयोग हो रहा है। इसके लिए हिंदी अनुभाग हर संभव प्रयास कर रहा है।

डॉ के एन राघवन, आई आर एस ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि मलयालय भाषा साहित्यिक कार्यों में समृद्ध है और बहुत पहले से अन्य भाषाओं की विशेष रचनाओं का मलयालम में अनुवाद किया गया था। कला और साहित्य के माध्यम से ही दुनिया में हर जगह लोगों की संस्कृतियों को पहचाना है और साहित्य इतिहास के सच्चे पहलुओं को प्रकट करता है।

श्री राजीव आलुंकल ने अपने मुख्य अभिभाषण में बताया कि कला और साहित्य कोमल हृदय में पैदा हो सकते हैं। साहित्य में रुचि न होना ही आज के युग की एक प्रमुख समस्या है और यदि भावात्मक प्रदूषण से छुटकारा पाना है तो कोमल बनना होगा। कला और साहित्य से जुडे लोग ही मन को कोमल बना सकते है। गर्व तब होता है जब हम सब कुछ स्वीकार कर लेते है जो पृथ्वी हमें देती है। जीवन जो है मृत्यु के पहले की

एक संभावना मात्र है यह पहचानकर हमारे आसपास के लोगों को प्यार कर पाने का एक मन होने से ऐसा मन देने वाली पूर्णता ही हमारे लिए सबसे बडा सौभाग्य है - श्री राजीव आलुंकल ने बताया।

हिंदी पखवाड़ा समारोह के समापन समारोह के रूप में रबड़ बोर्ड में राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया जाता है। रबड़ बोर्ड के मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के पदधारियों के लिए सितंबर 2022 के दौरान हिंदी पखवाड़ा समारोह के सिलसिले में विभिन्न प्रतियोगिताएं चलाई थीं। पखवाड़ा समारोह के सिलसिले में चलाई गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं के पुरस्कारों का वितरण राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर किया गया। इसके अलावा सम्मेलन के दौरान रबड़ बोर्ड के अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन सबसे बेहतर ढंग से किए तीन कार्यालयों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार दिए जाते हैं।

हिंदी पखवाड़ा समारोह, अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा राजभाषा नीति कार्यान्वयन का सर्वोत्तम निष्पादन, सबसे अधिक हिंदी लिखने वालों के लिए पुरस्कार आदि का वितरण समारोह के दौरान राजीव आलुंकल द्वारा किया गया।

जी सुनीलकुमार, सहायक निदेशक (रा भा) के कृतज्ञता ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का शुभांत हुआ।

रबड़ अधिनियम 1947: प्लैटिनम जयंती समारोह का उद्घाटन

देश में रबड़ उद्योग का विकास और प्राकृतिक रबड़ के उत्पादन में देश को आत्मनिर्भर बनाने में रबड़ बोर्ड द्वारा निभाई गई भूमिका का केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने सराहना की। रबड़ अधिनियम लागू होने के प्लेटिनम जयंती समारोह के हिस्से के रूप में कोट्टयम के माम्मन माप्पिला हॉल में आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में दिए गए वीडियो संदेश में रबड़ बोर्ड की गतिविधियों के बारे में उन्होंने उल्लेख किया था। प्राकृतिक रबड़ की गुणवत्ता सुधारने में बोर्ड के हस्तक्षेप ने रबड़ उत्पादों का देश से बाहर निर्यात बढाने में मदद की। 2047 में भारत को एक विकसित देश बनाने में बोर्ड की भूमिका अहम होगी -उन्होंने कहा। रबड़ क्षेत्र में समस्याओं को हल करने के लिए बोर्ड द्वारा किए जा रहे प्रयासों के लिए केंद्र सरकार का समर्थन होगा -उन्होंने बताया। डॉ सावर धनानिया, अध्यक्ष रबड़ बोर्ड ने उद्घाटन समारोह में अध्यक्षता की। श्री तोमस चाषिक्काडन, सांसद ने समारोह का उद्घाटन किया। सम्मेलन में केरल के मुख्यमंत्री पिणराई विजयन तथा त्रिपुरा के मुख्यमंत्री डॉ. मणिक साहा ने वीडियो संदेश दिये। असम मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा का संदेश बैठक में पढा गया।

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अधीन रबड़ बोर्ड का गठन 18 अप्रैल 1947 को रबड़ अधिनियम लागू होने के बाद हुआ था। रबड़ बागान

पीयूष गोयल

पिणराई विजयन

हिमंत बिश्व शर्मा

और उत्पाद विनिर्माण क्षेत्र के विकास हेतु लागू किए रबड़ अधिनियम 1947 का प्लाटिनम जयंती समारोह अब आयोजन हो रहा है।

रबड़ की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु वाले केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, गोवा, ओडिशा, उत्तर पूर्वी राज्यों में रबड़ की खेती फैली हुई है। रबड़ उत्पादन वाले क्षेत्र के किसानों की सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने में इस फसल ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रबड़ की खेती के माध्यम से प्राप्त आर्थिक उन्नति पूर्वोत्तर राज्यों में आतंकवाद को दूर करने में सहायक हुई है।

रबड़ उत्पादन बढाने और रबड़ उत्पादों के परीक्षण आदि करने के लिए भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान के अधीन कोट्टयम के केंद्रीय परीक्षण स्टेशन सहित देश के विभिन्न भागों में अनुसंधान - परीक्षण केंद्र कार्यरत हैं। 'मेक इन इंडिया' योजना के माध्यम से देश को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयासों के लिए रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र बहुत बड़ा योगदान दे रहा है। सामरिक और आर्थिक महत्व के कारण देश के सतत और व्यापक विकास के लिए अनिवार्य फसल बना दिया रबड़ को। रबड़ बोर्ड की विकास गतिविधियाँ जनता के सामने लाने के इरादे से प्लेटिनम जयंती समारोह आयोजित किया गया है।

रबड़ बोर्ड साल भर चलने वाले समारोहों के हिस्से के रूप में संगोष्ठियों, बैठकों और प्रदर्शनियों जैसे विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

रबड़ बोर्ड

1947 में देश में रबड़ कृषि के विकास के लिए रबड़ अधिनियम के लागू होने पर गठित रबड़ बोर्ड के आज देश के विभिन्न स्थानों पर

डॉ. मणिक साहा

तोमस चाषिकाडन

एन.के. प्रेमचंद्रन

विनय दीनू तेंदुलकर

तिरुवंचूर राधाकृष्णन

अमरदीप सिंह भाटिया आई.ए.एस.

संचालन प्रणालियां मौजूद हैं। कोट्टयम केंद्र के रूप में कार्य करने वाले बोर्ड ने रबड़ कृषि विकास, ज्ञान प्रसार, सांख्यिकीय आंकडों का एकत्रण, योजना, अनुसंधान, विपणन और श्रमिक कल्याण से संबंधित सेवाओं का देश भर में प्रसार करने में सफल हो गया है। रबड़ कृषकों के व्यापक विकास के लिए बोर्ड विविध गतिविधियां चला रहा है। रबड़ की खेती, जो केरल जैसे पारंपरिक क्षेत्रों तक ही सीमित थी, अब उत्तरपूर्वी राज्यों सहित रबड़ उगाने के लिए उपयुक्त सभी क्षेत्रों में फैल गई है। रबड़ की खेती 1950 की 75,000 हेक्टेयर से बढ़कर 2022 तक 8,52,000 हेक्टेयर हो गई। तब उत्पादन 16,000 टन था, अब 8,00,000 टन के करीब पहूँच गया है। उत्पादकता 284 किग्रा से बढकर 1472 किग्रा हो गई है।

बोर्ड द्वारा किसानों को वैश्विक स्तर की उन्नत कृषि पद्धतियां प्रदान की जा रही हैं। भारत के छोटे और सीमांत कृषकों को उनके द्वारा उत्पादित फसल के लिए लगभग 95 प्रतिशत बाजार मूल्य मिलता है। अन्य फसलों की तुलना में किसानों के लिए यह एक बड़ा फायदा है।

देश के रबड़ कृषक आज एक संगठित शक्ति है। रबड़ कृषकों का संघ एक बड़ी प्रणाली बन गयी है जिसमें 2659 रबड़ उत्पादक संघ, 671 स्वयं सहायता समूह, 17 कंपनियां और 248 समूह संसाधन केंद्र शामिल हैं। भारत में प्राकृतिक रबड़ क्षेत्र 12 लाख से अधिक कृषक, 538 संपदाएं, 8309 अधिकृत व्यापारियों, 108 प्रसंस्करणकर्ताओं, 4447 उत्पाद विनिर्माताओं और 25 लाख से अधिक श्रमिकों के साथ एक

षीला तोमस आई.ए.एस.
(सेवानिवृत्त)

डॉ सावर धनानिया

एम वसंतगेशन आई.आर.एस

के.ए. उण्णिकृष्णन

एन. हरि

अशोक नाथ

टी.सी. चाक्को

विशाल केंद्र के रूप में विकसित हो गया है। रबड़ बोर्ड द्वारा छोटे कृषकों और महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक उत्थान के लिए किए गए प्रयासों से आदिवासियों सहित समाज में बड़े प्रगतिशील बदलाव आए हैं।

रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र, रीच प्रयोगशाला, उर्वरक प्रयोग के संबंध में ऑनलाइन सिफारिश प्रणाली, रोगरोधी प्रथाओं और ज्ञान प्रसार के लिए मोबाइल ऐप, रबड़ के लिए इलेक्ट्रॉनिक व्यापार प्रणाली, 'एन.ई.' मित्रा योजना, कार्बन व्यापार और धारणीयता प्रमाणन आदि रबड़ बोर्ड की नई अवधारणाएँ हैं।

सांसद एन.के. प्रेमचंद्रन, विनय दीनू तेंदुलकर, विधायक तिरुवंचूर राधाकृष्णन ने आशीर्वचन दिये। अमरदीप सिंह भाटिया आई.ए.एस. अपर सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग विभाग ने विषय प्रस्तुत किया। प्लेटिनम जयंती के स्मरण में बनाए गए शिल्प का अनावरण भी उन्होंने किया। रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम वसंतगेशन आई.आर.एस. ने स्वागत भाषण किया। केरल रबड़ लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक षीला तोमस आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त), रबड़ बोर्ड के उपाध्यक्ष के.ए. उण्णिकृष्णन, रबड़ बोर्ड के कार्यकारी समिति सदस्य एन. हरि, केरल के रबड़ कृषकों के प्रतिनिधि टी.सी. चाक्को एवं उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के रबड़ कृषकों के प्रतिनिधि अशोकनाथ आदि ने सम्मेलन में वक्तव्य दिया।

बोर्ड ने ई-बाज़ार मंच के प्रतिभागियों के लिए घोषित 'एमरूबी' एकोलेडेस 2023' और 'एर्ली अडॉप्टर' पुरस्कार भी समारोह में वितरित किए गए।

अनुवाद की समस्याओं का समाधान

संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिये जाने से, यहाँ वर्षों से अंग्रेज़ी में हो रहे कार्यों को, हिंदी में चाहे-अनचाहे करना पड रहा है। इसके लिए अनुवाद का काफी सहारा लेना पड़ रहा है। आज भी संसूचनाएं मूल रूप से अंग्रेज़ी में ही तैयार की जा रही हैं। आदेशों के अनुपालन हेतु उनका भी हिंदी अनुवाद करना लाज़मी हो रहा है। इस सिलसिले में तकनीकी और गैर-तकनीकी दोनों प्रकार की सामग्री का अनुवाद करना पडता है जिसमें विधि साहित्य भी शामिल है।

अनुवाद की मूल समस्या - 1.पारिभाषिक शब्दावली 2. वाक्य संरचना। इसके अलावा अर्थ की अनेकरूपता तथा संक्षेपों की समस्या भी है। वैसे तो अंग्रेज़ी में प्रयुक्त कई शब्दों का सही-सही हिंदी पर्याय उपलब्ध नहीं। जैसे कि डीरेलमेंट के लिए गाडी पटरी से उतर जाना - बडा लंबा चौडा वाक्यांश जैसा शब्द है। बहुत से अंग्रेज़ी शब्द ऐसे हैं जिनके लिए हिंदी में एक ही शब्द अपना लिया गया है। जैसे कि conclusion, termination के लिए 'अंत'; reconciliation & solution के लिए 'समाधान'; interlocking के लिए 'अंतर्पाशन'। उपयोक्ता परंपरावादी है, अतः पुराने शब्द ही उन्हें पसंद हैं। इसके अतिरिक्त कई शब्द ऐसे दुरूह और बोझिल हैं कि अनुवादक अनुवाद करते समय समझ नहीं पाते कि किस शब्द का प्रयोग वे कहाँ, कैसे और क्यों करें। अस्पष्टता के दोष से बचने के प्रयास में वक्रोक्ति, पुनरुक्ति, अत्युक्ति दोष का शिकार, अनुवादक जाने-अनजाने बन जाता है।

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के अनुसार अनुवाद सरल, सरस व सहज होना चाहिए। लेकिन सरलता-सहजता की परिभाषा किसी ने अब तक नहीं की है। असका मानक भी मालूम नहीं किसी को। जो भी हो, अर्थ के अनर्थ होने की संभावना से भी बचकर चलना है। आये दिन, डेटा-बेस के आधार पर अलग-अलग विषय संबंधी शब्दावली कंप्यूटर पर तैयार की जा रही है। जिससे विषय विशेष या विभाग विशेष के अनुवाद में संशय/दुविधा/दिक्कत दूर हो जाएगा। पारिभाषिक शब्दों का मानकीकरण एक हद तक अनुवाद समस्या का समाधान है। अंग्रेज़ी के ऐसे अनेक शब्द हैं जिनके एकाधिक अर्थ हैं। ऐसे प्रसंगों में अनुवादक सतर्क न रहे तो गंभीर भूल हो सकता है। उदाहरणार्थ dismiss के लिए 'खारिज', 'बर्खास्त'-ये दो शब्द हैं। अर्थ की दृष्टि से दोनों प्रायः एक जैसे है। लेकिन इनके प्रयोग में प्रसंगानुसार भिन्नता है। अर्थात् व्यक्ति के संदर्भ में बर्खास्त' और मामले के संदर्भ में 'खारिज' का प्रयोग

करके अनुवाद की समस्या से बच सकता है। प्रत्येक भाषा के वाक्य बनाने के नियम अलग-अलग हैं। हिंदी व अंग्रेज़ी अलग-अलग भाषा वर्ग की हैं। अतः उनकी वाक्य रचना प्रक्रिया भी भिन्न-भिन्न है। अंग्रेज़ी के वाक्य कभी-कभी बहुत लंबे होते हैं जिन्हें हिंदी की प्रकृति के अनुरूप छोटे-छोटे सरल वाक्यों में बांटकर अनुवाद करना पडता है। इस सिलसिले में छोटे-छोटे वाक्यों को सरल वाक्य बनाने में काफी सतर्कता बरतनी पडती है।

मिश्र वाक्य तथा संयुक्त वाक्य के मुख्य वाक्य तथा उपवाक्यों को चुनकर, उनके आपसी संबंध की पहचान करके हिंदी की प्रकृति के अनुसार, उनका अनुवाद न करने से निश्चित ही विकट समस्यायें खडी हो जाती हैं। अंग्रेजी में 'if' से आरंभ होनेवाला उपवाक्य, शुरू में या अंत में आसानी से आ सकता है क्योंकि वह उस भाषा की प्रकृति में है। लेकिन हिंदी में उसका समानार्थी शब्द 'यदि' का प्रयोग हमेशा वाक्य के आरंभ में होना चाहिए। प्रशासनिक भाषा का स्वरूप नपा-तुला व पूर्वनिर्धारित होता है। कुछ वाक्यों में अभिव्यक्त करनेवालों की छूट होगी। इसमें छूट का संतुलित प्रयोग करना भी अपने आप में एक कला है। विधिक साहित्य के अनुवाद में प्रत्येक शब्द के निश्चित अर्थ का ध्यान रखना एकदम ज़रूरी है।

ऐसे मौके भी कम नहीं जबकि अनुवादक को कभी-कभी छोटे-छोटे वाक्यों से भी जूझना पडता है जिनके दो-दो अर्थ हो सकते हैं। इनमें से कौन सा अर्थ यहाँ ठीक बैठता है, इसका पूरे अनुच्छेद या पैरा या परिच्छेद या निबंध को आदि से अंत तक पढने के बाद ही, सही सही लग सकता है। कार्य की शीघ्रता पर आँच आये बिना, पूरा प्रसंग पढ-समझ कर उसका अनुवाद सही दशा व दिशा में करना इस समस्या का समाधान है। यदि अनुवादक, प्रसंग को समझे बिना, अनुवाद करना आरंभ कर दें तो यह मुमकिन है कि वह अनजाने गलती कर बैठें। विधि और नियमों के अनुवाद में अर्थ की अनेकरूपता और क्लिष्ट व जटिल बन जाती है। इस सिलसिले में उल्लेखनीय है कि कुछ अंग्रेजी वाक्य इतने लंबे व दुरूह बन जाते हैं कि उनका सही अर्थ पहचान लेने के लिए अनुवादक को कडी मेहनत करना पडती है। जी हाँ, मेहनत का फल मीठा होता है।

अर्थ की दृष्टि से अनुवाद की समस्याओं को हम दो वर्गों में रख सकते हैं।

1. अर्थ ग्रहण की समस्यायें।

2. अर्थ अभिव्यक्ति (संप्रेषण) की समस्यायें।

मूल भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों में बराबर अधिकार और विषय ज्ञान के बल पर इस पेचीदे समस्या का समाधान किया जा सकता है।

प्रशासन में संक्षिप्तियों का बडा महत्व है क्योंकि इनके सहारे संप्रेषण सरल हो जाता है। संक्षिप्तियों के प्रयोग से श्रम व स्थान की बचत हो जाती है। अतः इन्हें विधिवत मान्यता दी जानी है। संक्रमण काल में इनका लिप्यंतरण करके प्रयोग करना ही समस्या समाधान है। अनुवाद की समस्या का समाधान करने के लिए अनुवादकों को अच्छा, व्यावहारिक एवं अनुप्रयुक्त प्रशिक्षण आवश्यक है ताकि अनुवाद में एकरूपता एवं उच्च स्तरीयता कायम रखी जा सकें। अंत में अनुवाद में सबसे बडी आवश्यकता है- अनुभव की। जी हाँ, करत-करत अभ्यास, मूढमति भी विद्वान बन जाता है।

- स्व. श्री डी. कृष्णपणिक्कर
भूतपूर्व उप निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार

राजेश अग्रवाल आई.ए.एस., अपर सचिव, वाणिज्य मंत्रालय ने रबड़ बोर्ड की गतिविधियों का मूल्यांकन किया

रबड़ बोर्ड की गतिविधियों के मूल्यांकन के लिए केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अपर सचिव राजेश अग्रवाल आई.ए.एस ने रबड़ बोर्ड सदस्य, रबड़ क्षेत्र से जुड़े विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों, रबड़ बोर्ड के अधिकारियों आदि से कोची स्थित स्पाइसेस बोर्ड के मुख्य कार्यालय में चर्चा की। उन्होंने कहा कि सरकार प्राकृतिक रबड़ से संबंधित सभी क्षेत्रों में सतत विकास का लक्ष्य रखती है और यदि विशेष रूप से एक क्षेत्र के लिए कुछ किया जाता है तो यह अन्य क्षेत्रों को प्रभावित कर सकता है। उन्होंने कहा कि सतत विकास के लिए एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र की आवश्यकता है जो सभी क्षेत्रों को सम्मिलित करे। नियमित रूप से वित्तीय सहायता प्रदान करके किसी भी प्रणाली को चालू रखना टिकाऊ नहीं है। लेकिन सरकार अनुसंधान और बुनियादी ढांचे के विकास में निवेश करने के लिए प्रतिबद्ध है। एन.ई. मित्रा जैसे उपभोग क्षेत्र की वित्तीय सहायता से चलाने वाली सरकारी-निजी साझेदारी से बनी योजनाओं पर जोर देना है उन्होंने इशारा किया। उन्होंने यह भी कहा कि रबड़ बोर्ड के ई-ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म 'एम रूबी' और मोबाइल ऐप 'रबसिस' जो रबड़ के लिए आवश्यक उर्वरक की मात्रा के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं - जैसी पहलें

प्रगतिशील विचार हैं।

रबड़ बोर्ड की गतिविधियों से संबंधित विस्तृत रिपोर्ट रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक डॉ. के.एन. राघवन आई.आर.एस. ने बैठक में पेश की। प्राकृतिक रबड़ से संबंधित आंकडे, बोर्ड की नई योजनाएं, अभिनव पहलें आदि सभी उपलब्धियां रिपोर्ट में शामिल थीं।

केंद्रीय वाणिज्य विभाग से निदेशक (बागवानी), श्री नीरज गाबा, रबड़ बोर्ड उपाध्यक्ष के ए उण्णिकृष्णन, रबड़ बोर्ड सदस्य पी रवींद्रन, सी एस सोमन पिल्लै, कोरा सी जोर्ज, टी पी जोर्जकुट्टी बैठक में भाग लिए। छोटे कृषकों के प्रतिनिधि पी आर मुरलीधरन, बिन्नी मात्यु तथा स्मिजी के बालन बैठक में भाग लिए। राजीव बुद्धिराजा (महानिदेशक, ऑटोमोटिव टायर मैन्यफैक्चरर्स एसोसिएशन-एटीएमए), संजीत आर. नायर (सचिव, उपासि, यूपीएएसआई), सतीश एब्रहाम (अध्यक्ष, लाटेक्स प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन), जॉर्ज वाली (अध्यक्ष, इंडियन रबड़ डीलेर्स फेडरेशन), राजन के बी (अध्यक्ष, कोचिन रबड़ मेरचन्ट एसोसिएशन), पी हरि (संयोजक, लोकल सप्लई चेइन एंड रिसोर्सस ग्रूप, एटीएमए), एम के गोपालकृष्णन (अध्यक्ष, इलक्काड रबड़ उत्पादक संघ) मोन्सी पी कुर्यन (प्रबंध निदेशक, मणिमलयार रबेर्स) पी अजीत कुमार (अध्यक्ष, मणलडी रबड़ उत्पादक संघ), बाबू जोसेफ (निदेशक मंडल के सदस्य, पल्लिक्कत्तोड रबड़ उत्पादक संघ), तोमस जेवियर (अध्यक्ष, पुलिमावु रबड़ उत्पादक संघ), पी.आर. नाग (अध्यक्ष, नेशनल फेडरेशन ऑफ रबर प्रोडक्ट्स एक्सपोर्टेर्स एसोसिएशन) बैठक में भाग लिए। बैठक में रबड़ बोर्ड के गण वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

अधीनस्थ कार्यालयों को राजभाषा ट्रॉफी

बोर्ड के अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए हर वर्ष राजभाषा ट्रॉफियाँ दी जाती हैं। वर्ष 2022 के दौरान रबड़ बोर्ड प्रादेशिक कार्यालय, तृश्शूर को योजना के अधीन प्रथम स्थान के लिए चयनित किया। प्रादेशिक कार्यालय तृश्शूर के पूरे पदधारी राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में सक्रिय योगदान देते हैं। कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढावा देने के लिए फाइलों व रजिस्टरों में हिंदी के उपयोग करने वालों के लिए कार्यान्वित प्रोत्साहन योजना में कार्यालय के सभी पदधारी भाग लेते हैं। वर्ष के दौरान कार्यालय के एक पदधारी ने हिंदी शिक्षण योजना द्वारा चलायी परांगत परीक्षा में अच्छे अंकों को हासिल करके उत्तीर्ण हुआ।

प्रादेशिक कार्यालय, अडूर को इस योजना के अधीन द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। कार्यालय के कार्यालय प्रमुख सहित सभी पदधारी हिंदी में पत्राचार और टिप्पणी लेखन में भाग लेते हैं। वर्ष के दौरान कार्यालय के दो पदधारियों ने हिंदी शिक्षण योजना द्वारा चलायी परांगत परीक्षा में अच्छे अंकों को हासिल करके उत्तीर्ण हुआ।

प्रादेशिक कार्यालय पालक्काड को इस योजना के अधीन तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में कार्यालय के सभी पदधारी सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और विशेष योगदान देते हैं। वर्ष के दौरान कार्यालय के एक पदधारी हिंदी शिक्षण योजना द्वारा चलायी परांगत परीक्षा में अच्छे अंकों को हासिल करके उत्तीर्ण हुआ।

International Rubber Study Group

आई आर एस जी का अध्यक्षपद भारत को

अंतर्राष्ट्रीय रबड़ अध्ययन ग्रूप (आईआरएसजी) के अध्यक्षपद पर भारत को एकमत से चुन लिया गया। भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए भारतीय रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक और आईआरएसजी के लिए भारतीय समूह के प्रमुख डॉ के एन राघवन, आई आर एस अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला। आगामी दो वर्षों तक वे आईआरएसजी के अध्यक्ष पद पर बने रहेंगे।

आइवरी कोस्ट (कोट डी आईवोर) का कार्यकाल समाप्त होने पर भारत को इस पद के लिए चुन लिए गए। रबड़ का उत्पादन और उपभोग एक समान करने वाले राष्ट्र के रूप में भारत आईआरएसजी के सदस्य उत्पादकों और उपभोक्ताओं के हितों का देखभाल सही ढंग से कर सकता है।

प्राकृतिक रबड़ और कृत्रिम रबड़ का उत्पादन और उपभोग करने वाले राष्ट्रों की सरकार सदस्य बनें अंतर्राष्ट्रीय संगठन है यह अंतर्राष्ट्रीय रबड़ अध्ययन ग्रूप। सिंगापुर स्थित संगठन 1944 में इस तरह गठित किया गया था। प्राकृतिक रबड़ और कृत्रिम के उत्पादक और उपभोक्ता को एक साथ बैठकर सामान्य हितों के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एकमात्र मंच हैं आईआरएसजी। आईआरएसजी द्वारा प्राकृतिक रबड़ और कृत्रिम रबड़ के उत्पादन, उपभोग और व्यापार पर आंकड़ों का एकत्रण और सदस्य राष्ट्रों को प्रदान किया जाता है। इसके अलावा संगठन, वैश्विक रबड़ उद्योग को प्रभावित करने वाले विषयों पर चर्चा करने के लिए सदस्य राष्ट्रों को मंच प्रदान करती है और सरकार और उद्योग क्षेत्र के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है। रबड़ क्षेत्र के विकास धन की सहायता के लिए कॉमन फंड फ़र कमोडिटीस द्वारा मान्यता प्राप्त एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय कमोडिटी संगठन है आईआरएसजी।

सदस्य राष्ट्रों के अलावा रबड़ उद्योग क्षेत्र और सचिवालय के बीच आपसी संबंध सुदृढ बनाने के लिए सहयोगियों का एक पैनल भी संगठन को हैं। रबड़ उद्योग में इच्छुक कंपनियों और संस्थानों को वार्षिक सदस्यता शुल्क का भुगतान करके समिति में सदस्य बन सकते है।

रबड़ के क्षेत्र में तीन अंतर्राष्ट्रीय संगठन काम कर रहे हैं। वे हैं - एसोसिएशन ऑफ नैचुरल रबर प्रोड्यूसिंग कंट्रीस (एएनआरपीसी), अंतर्राष्ट्रीय रबड़ अध्ययन समूह (आईआरएसजी), अंतर्राष्ट्रीय रबड़ अनुसंधान विकास बोर्ड (आईआरएस)। पहले दो संगठन में सदस्य राष्ट्र हैं। तीसरा विविध राष्ट्रों के रबड़ अनुसंधान केंद्रों का एक संघ है। आईआरएसजी के नए अध्यक्ष 31 मार्च, 2023 को सिंगापुर में सदस्य राष्ट्रों की बैठक की अध्यक्षता करेंगे।

एक कदम स्वच्छता की ओर
स्वच्छ भारत अभियान-परिणाम मेरी दृष्टि में

एस एस बिंदु
कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान, कोट्टयम-9

देश में सार्वभौमिक स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित करने के प्रयासों में तेजी लाने के उद्देश्य से सरकार द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की थी। गौरतलब है कि इस मिशन को दो अलग - अलग, मंत्रालयों -ग्रामीण क्षेत्रों के लिये पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय और शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा निष्पादित किया जा रहा है। स्वच्छता का अर्थ है साफ सफाई। साफ सफाई से रहना मनुष्य जीवन के लिए अति आवश्यक हैं। स्वच्छता का भाव हमारे मन से जुडा हुआ है। इसी भाव के प्रति जागरूकता सृजित करने के लिए तथा देश को साफ सुधरा और गंदगी से मुक्त बनाने के लिए हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र व्यापी स्वच्छ भारत सुंदर भारत अभियान का शुभारंभ 2 अक्तूबर 2014 को गांधी जयंती के शुभ अवसर पर नई दिल्ली में वाल्मीकि बस्ती में झाड़ू लगाकर किया। स्वच्छ भारत सुंदर भारत अभियान की घोषणा वर्तमान प्रधानमंत्री श्री मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2014 को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में की थी। इसके तहत उन्होंने कहा था कि 2019 में महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती तक देश को एक स्वच्छ भारत के रूप में प्रस्तुत करना है। उनके अनुसार यही गांधीजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी, क्योंकि गांधीजी ने ही देशवासियों को 'क्यूट इंडिया क्लीन इंडिया का संदेश दिया था। प्रधानमंत्री ने स्वच्छता का आह्वान करते हुए संदेश के रूप में कहा था कि हम मातृभूमि की स्वच्छता के लिए अपने आप को समर्पित कर दे। इसके लिए प्रत्येक सप्ताह दो घंटे अर्थात् सभी देशवासी प्रतिवर्ष सौ घंटे का योगदान करें।

स्वच्छता

सामान्य शब्दों में स्वच्छता का आशय कीटाणु, गंदगी, कचरा और अपशिष्ट से मुक्त होने की स्थिति और उसे बनाए रखने की स्थिति से है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, स्वच्छता का तात्पर्य मानव अपशिष्ट को सुरक्षित प्रबंधन हेतु सुविधाओं और सेवाओं का प्रावधान है। व्यापक तौर पर स्वच्छता में ठोस कचरे और जानवरों के कचरे का सुरक्षित प्रबंधन भी शामिल होता है ।

स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य

भारत में खुले में शौच की समस्या को समाप्त करना अर्थात् संपूर्ण देश को खुले में शौच करने से मुक्त घोषित करना, हर घर में शौचालय का निर्माण, जल की आपूर्ति और ठोस व तरल कचरे का उचित तरीके से प्रबंधन करना है। इस

एम वसंतगेशन आई आर एस ने रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक का पदभार ग्रहण किया

एम. वसंतगेशन आई.आर.एस. ने रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक का पदभार ग्रहण किया। वे 2009 बैच भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी है और कोची में सीमा शुल्क अतिरिक्त आयुक्त (निवारक) के पद पर कार्यरत थे।

श्री वसंतगेशन तमिलनाडु के करूर जिले के पठानकोट्टई के मूल निवासी है, जिन्होंने कोयंबतोर भारतीयार विश्वविद्यालय से गणित में स्नातक किया। केंद्रीय वित्त मंत्रालय के तहत कई पदों पर काम किया हैं। उन्होंने केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सेवा कर, जीएसटी, सीमा शुल्क आदि कई क्षेत्रों में भी सेवा की हैं।

अभियान का उद्देश्य सडकों और फुटपाथों की सफाई, अनधिकृत क्षेत्रों से अतिक्रमण हटाना, तथा स्वच्छता से जुडी प्रथाओं के बारे में लोगों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाना है। इस अभियान में दो उप अभियान स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) तथा स्वच्छ भारत अभियान (शहरी) सम्मिलित हैं। इसमें जहाँ ग्रामीण इलाकों के पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय व ग्रामीण विकास मंत्रालय जुडे हुए हैं, वहीं शहरों के लिए शहरी विकास मंत्रालय जिम्मेदार हैं। वर्ष 2017 के आँकड़े के अनुसार, देश की तकरीबन 66 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं और इतनी बड़ी आबादी को संपूर्ण स्वच्छता की ओर ले जाने में सबसे बडी चुनौती लोगों की मानसिकता में परिवर्तन लाना था ताकि वह खुले क्षेत्रों में शौच करने के बजाय घरेलू शौचालयों का उपयोग करें। ग्रामीण मानसिकता के कारण वहाँ के अधिकांश घरों में शौचालय नहीं थे, इसी कारण ग्रामीण क्षेत्रों के लिए स्वच्छ भारत अभियान के घटकों में शौचालयों के निर्माण के साथ-साथ सूचना शिक्षा और संचार संबंधी गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करना भी शामिल था। उल्लेखनीय है कि ग्रामीण क्षेत्रों में एक समर्पित सीवरेज नेटवर्क की आवश्यकता कम होती है, क्योंकि वहाँ जो भी शौचालय मौजूद होते हैं वे घर के सोक पिट से जुड़े हुए होते हैं। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में कचरे के भी बेहतर तरीके से प्रबंधित किया जाता है क्योंकि यह कार्य घरेलू स्तर पर किया जाता है और इसके अधिकांश हिस्से का प्रयोग खेतों में किया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के स्वच्छता स्तर में सुधार करना शहरी क्षेत्र की अपेक्षा बहुत कम जटिल है। इस के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत को 20-20 लाख रुपए सालाना अनुदान देने की और ग्रामीण क्षेत्रों में 11-11 करोड शौचालयों का निर्माण के लिए 1.34 लाख करोड रुपए की मंजूरी प्रदान की गई है।

स्वच्छ भारत अभियान में हमारा योगदान

स्वच्छता केवल प्रशासनिक उपायों के बलबूते नहीं चल सकती। इसमें प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी परम आवश्यक होती हैं। हम अनेक प्रकार से स्वच्छता में योगदान कर सकते हैं, जो निम्नलिखित हो सकते हैं - कूडे कचरे, सफाई कर्मी के आने पर उनके डिब्बे या गाडी में ही डाले। कूडे कचरे को नालियों में न बहाए। इससे नालियां अवरुद्ध हो जाती है। गंदा पानी सडकों पर बहने लगता है। पॉलिथीन का बिल्कुल प्रयोग न करें। यह गंदगी फैलाने वाली वस्तु तो

है ही, पशुओं के लिए भी बहुत घातक है। घरों के शौचालयों की गंदगी नालियों में न बहाएं। खुले में शौच न करें तथा बच्चों को नलियों या गलियों में शौच न कराएं। नगरपालिका के सफाई कर्मचारियों का सहयोग करें। नदियों के आस पास जमे कूडे कर्कड़ सडकों की सफाई करेंगे। संगीत, नाटक और स्वच्छता पखवाड़ा अभियान के जरिए लोगों को स्वच्छता के प्रति जिम्मेदार बनाएंगे। देश के युवा स्वच्छता संबंधी पहल और बाद की तस्वीरें एवं वीडियो शेयर करके इस अभियान में अपना सहयोग दे सकता है।

स्वच्छ भारत अभियान का परिणाम क्या है

प्रारंभ में, जब अभियान शुरू किया गया था, 2014 में लोग इस पहल पर विश्वास करने से झिझक रहे थे। आठ साल बाद भारत खुले में शौच मुक्त है। घरों में स्वच्छ और पीने योग्य पानी उपलब्ध है और हमारे शहर हर दिन स्वच्छ हो रहे हैं। यह स्वच्छ भारत मिशन इन लोगों की जीवन स्थितयों को सुधारने में बहुत मदद कर सकता है। दूसरे शब्दों में स्वच्छ भारत अभियान उचित अपशिष्ट प्रबंधन में भी सहायक होगा। इस मिशन से देश की आर्थिक स्थिति में इजाफा हुआ है। आधिकारिक रिपोर्टों के अनुसार भारत के आर्थिक बजट ने ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति परिवार 727 अमेरीकी डॉलर से अधिक की कमाई की है। स्वच्छता की बढती पहूंच के कारण बीमारियों का संक्रमण और डायरिया जैसे मामलों की भी कमी आई है। स्वच्छ भारत की प्राप्ति के साथ पानी और स्वच्छता संबंधी बीमारियों में उल्लेखनीय कमी दिखाई दी है। भारत में स्वच्छता, साफ सफाई और स्वच्छता की स्थिति को देखते हुए ऐसे लगता है कि स्वच्छ भारत मिशन सफलता की राह में है। पिछले वर्षों में भारत में लाखों मौतें स्वच्छता की कमी की वजह से हुईं हैं। जागरूकता का भाव पैदा करना और स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से स्वच्छता सुविधाओं को बढावा मिला। स्वच्छ भारत मिशन के तहत सफाई के प्रति लोगों में जागरूकता फैली। स्वच्छ भारत योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्र में सामान्य जीवन स्तर में सुधार होगा। स्वच्छ भारत अभियान के तहत 2 अक्तूबर 2014 से लेकर वर्ष 2022 तक 20-24 करोड व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों का निर्माण किया जा चुका है। वहीं सरकार 2023-25 तक की अवधि के लिए स्वच्छ भारत अभियान के चरण 2 को मंजूरी दे दी है। देश के नए उभरते पात्र ग्रामीण परिवारों और गांवों में ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए शौचालय की सुविधा प्रदान की जाएंगी। यह कार्य पारिवारिक स्तर की स्थिरता पर ध्यान देते हुए किया जाएगा। स्वच्छ और स्वच्छ परिवेश के अलावा, इस मिशन में शामिल लोगों को सशक्त बनाया है और सम्मान भी दिया है। ओडीशा के पारादीप में ट्रान्सजेंडर और कूडा बीनने वालों को सक्रिय रूप से अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली में शामिल किया गया है। चाहे प्रधानमंत्री सफाई कर्मचारियों के पैर धो रहे हो या कूडा बीनने वालों और ट्रान्सजेंडर को रोजगार मिल रहा हो स्वच्छ भारत अभियान ने लोगों को नया सम्मान दिया है जो पहले नहीं था।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान के परिणाम

1. 1.04 करोड परिवारों के लिए 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय, 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय का निर्माण किया।
2. ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए प्रत्येक शहर

में सुविधाएं प्रदान कीं।

3. प्रमुख सार्वजनिक स्थानों जैसे पर्यटन स्थल, बाजार, बस स्टेशन, रेलवे स्टेशन आदि जगहों पर सार्वजनिक शौचालय का निर्माण करवाया।
4. मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करना। इस कार्यक्रम को पांच साल की अवधि में 4401 शहरों में लागू करने का लक्ष्य रखा गया था। कार्यक्रम पर व्यय होने वाले 62,009 करोड रुपए में से केंद्र सरकार की तरफ से 14,623 करोड रुपए उपलब्ध कराए गए थे।

ग्रामीण क्षेत्र में स्वच्छ भारत अभियान के परिणाम

1. ग्रामीण क्षेत्रों को खुले में शौच से मुक्त किया।
2. लगभग 11 करोड 11 लाख शौचालयों का निर्माण किया गया जिसके लिए 1 लाख 34 हजार करोड रुपए खर्च किया गया।
3. ग्रामीण क्षेत्र से निकलने वाले कचरे को जैव उर्वरक और ऊर्जा के विभिन्न रूपों में परिवर्तित किया।
4. ग्रामीण क्षेत्र की साफ सफाई पर विशेष ध्यान दिया।
5. ग्रामीण क्षेत्र में ग्राम पंचायत के माध्यम से सूखे और गीले अपशिष्ट पदार्थों के निस्तारण की अच्छी प्रबंधन व्यवस्था सुनिश्चित की।

स्वच्छ भारत अभियान चरण II

देश ने इस अभियान के प्रथम चरण के अंतर्गत अपना लक्ष्य हासिल तो कर लिया है, लेकिन खुले में शौच की प्रथा से मुक्ति को स्थाई रखना एक बडी चुनौती है। स्वच्छ भारत अभियान के दूसरे चरण को 2020-21 से 2024-2025 की अवधि के लिए लागू किया गया है। दूसरे चरण के तहत गांवों में ठोस एवं तरल कचरे के सुरक्षित प्रबंधन पर विशेष रूप से बल दिया जाएगा। स्वच्छता प्रौद्योगिकी को भी इस चरण में बढावा देने की बात कही गई हैं जिसमें दो पिट वाले शौचालय के निर्माण को प्रोत्साहित किया जाएगा।

स्वच्छ भारत अभियान भारत में शुरू की गई सबसे महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लाखों से अधिक शौचालयों का निर्माण अधिक से अधिक संख्या में कराया गया है। लोगों के घर-घर जाकर कचरे के संग्रहण,

पृथक्करण और ठोस कचरे के उचित निपटान जैसी सुविधाएं प्रदान की गई हैं। शौचालयों के निर्माण से लोगों को सफाई कर्मचारियों के रूप में रोजगार भी मिला है।

स्वच्छता पखवाड़ा-
स्वच्छ भारत की तीसरी वर्षगांठ

स्वच्छ भारत की तीसरी वर्षगांठ मनाने के लिए कार्यक्रम को 'स्वच्छता पखवाड़ा' के रूप में नामित किया गया है। इसका उद्देश्य भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों के कार्य क्षेत्र में सुरक्षा के मुद्दों और प्रथाओं पर गहनता से बल देने के लिए पखवाडे का आयोजन करना है। स्वच्छता पखवाड़ा अप्रैल 2016 में शुरू किया गया था पखवाडा गतिविधियों के लिए मंत्रालय के आयोजन में सहायता हेतु एक वार्षिक कलेंडर पहले से ही मंत्रालयों के बीच परिचालित किया गया है। स्वच्छता पखवाडा मनाने वाले मंत्रालयों की स्वच्छता की समीक्षा ऑनलाइन मॉनिटरिंग उपयोग करके नजदीकी से मोनिटरिंग की जाती है जिसपर वे स्वच्छता गतिविधियों से संबधित कार्य योजनाएँ, चित्र, वीडियो आदि अपलोड और साझा कर सकते है। स्वच्छता पखवाड़ा मनाने के बाद मंत्रालय विभाग प्रेस कॉन्फ्रेन्स तथा अन्य संवाद तरीकों के माध्यम से अपनी उपलब्धियों की घोषणा करते हैं। स्वच्छता पखवाडे में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले मंत्रालय को स्वच्छता के लिए श्रेष्ठ विभाग का पुरस्कार भी दिया जाता है। मंत्रालय और मीडिया द्वारा स्वच्छता शपथ ली जाती है तथा लोगों के बीच स्वच्छता संदेश फैलाने के लिए जागरूक भी किया जाता है। भारत देश में स्वच्छता अभियान के बाद कई लोगों को नया रोजगार मिला है और 81000 टन सूखा कचरा देश मे इकट्ठा करके विश्व रिकॉर्ड भी बनाया है।

स्वच्छ भारत अभियान कितना सफल रहा?

कभी-कभी जब फैला हुआ घर ठीक से समेट नहीं जाता तब हम क्या करते है? कोई ना देखे इसलिए उसे अलमारी में ठूंस देते है।

यही हाल स्वच्छ भारत मिशन का भी है। इसके लिए सिर्फ सरकार ही जिम्मेदार नहीं है हम स्वयं भी इस के लिए जिम्मेदार है। पर्यटन स्थलों, धार्मिक स्थलों और दूसरे सार्वजनिक स्थलों पर गंदगी फैलाते हैं। पवित्र नदियों में साबुन का धड़ल्ले से प्रयोग करते है। रेलवे और बस स्टैंड पर ठेके पर जो शौचालय चलाते हैं उसकी हालत तो बदतर है। कचरे का निस्तारण न करके पास की छोटी नदी अथवा तालाबों में डाल दिया जाता है।

भारत में स्वच्छता अभियान की बहुत ही आवश्यकता है, इसके कई कारण हैं। यह भविष्य में हमारे देश के लोगों की अज्ञानता के कारण होने वाले नुकसान से बचा सकता है।

1. गैर जिम्मेदाराना तरीके से कचरे को बाहर कहीं भी फेंकने की हमारी आदत सही नहीं है और भविष्य में विशेष रूप से प्लास्टिक का कचरा हमारे लिए एक गंभीर मुद्दा बन जाएगा।
2. ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों में खुले में शौच बहुत ही बडी चिंता का विषय है। गाँवों में लोग शौचालय का उपयोग करना पसंद नहीं करते हैं, और शहरों में लोग शौचालयों की अच्छी तरह सफाई नही करते है। इस तरह यह स्वच्छता की खराब तस्वीर दर्शाती है।
3. विशेष रूप से सरकारी स्थानों और कार्यालयों की दीवारों पर तंबाकू और पान इत्यादि खाकर थूकना सबसे खराब दिखता है और यह हमारे स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा नहीं है।
4. खुले में कचरा फेंकने से हमारी हवा, पानी

और मिट्टी प्रदूषित होती है, ये लोगों में कई तरह के हवा जनित रोग और जल जनित रोगों का मूल कारण बनते है ।

ग्रामीण इलाकों के स्कूलों में जहाँ लडकियों और लडकों के लिए उचित स्वच्छ शौचालय उपलब्ध नहीं हैं, और यदि शौचालय होते है तो भी बहुत ही गंदे और बदतर स्थिति में होते हैं। थे कि भारतीयों में स्वच्छता के प्रति उदासीनता है और उन्हें जागरूक करना जरूरी है। उनके अनुसार सभ्य और विकसित मानव समाज के लिए स्वच्छता बहुत ही जरूरी है। स्वच्छता ही जीवन है स्वच्छ रहना हमारा अनिवार्य कर्म और धर्म है। समाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से स्वच्छ भारत सुंदर भारत अभियान एक महत्वपूर्ण उद्देश्य

उपसंहार

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदरदास मोदीजी ने स्वच्छ भारत अभियान चलाया है। इसका प्रचार प्रसार मीडिया के माध्यम से निरंतर किया जा रहा है। अनेक जन प्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी, प्रसिद्ध व्यक्ति इसमें भाग ले रहे हैं। जनता को इसमें अपने स्तर पर सहयोग देना चाहिए। इसके अलावा गांव में खुले में शौच करने की प्रथा को समाप्त करने के लिए लोगों के घरों में शौचालय बनवाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसके लिए आर्थिक सहायता भी दी जा रही है। इन अभियानों में समाज के प्रत्येक वर्ग को पूरा सहयोग करना चाहिए। गांधीजी ने स्वच्छ भारत का सपना संजोया था। उनका कथन था स्वच्छता स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है। उनका मानना था कि साफ सफाई रखना ईश्वर भक्ति करने के बराबर है। गाँधीजी बहुत पहले समझ चुके प्रधान अभियान है। इसमें हम सबकी भागीदारी वांछनीय हैं।

धरती, पानी, हवा
रखो साफ।
वरना आने वाली पीढी
नहीं करेंगी माफ
विकसित हो राष्ट्र हमारा
स्वच्छ हो देश हमारा
स्वच्छ और स्वस्थ होगा
तभी तो आगे बढेगा भारत
स्वच्छता ही सेवा
गांधीजी के सपने को कीजिए साकार
स्वच्छता हो देश में अपार।

निबंध लेखन प्रतियोगिता में चयनित

अंधा कानून (कविता)

प्रशांत देब रॉय
प्रभारी उप रबड उत्पादन आयुक्त
प्रादेशिक कार्यालय, जोरहट

भारत एक गणतांत्रिक मुल्क है,
हम सब गंगा मैया की कृपा से इसमें बसते हैं।
अदालत तो है, जज और कानून भी हैं,
लेकिन कहीं न्याय मिलता नहीं है,
कानून और जज दोनों अंधे न होकर भी,
अंधों की तरह निर्णय लेते हैं।
फिर भी हम गर्व के साथ कहते हैं कि हम भारतीय हैं।
पैसे की लालच में आकर सभी अंधे बन जाते हैं,
आम आदमी की परेशानी बढ जाती है।
ये अंधा कानून है।।

कोट-सूट-टाई पहन के ऐसा भाषण देते हैं,
कि वे गंगा मैया की तरह एकदम पवित्र हैं,
लेकिन उन लोगों का दिल कोयले से भी ज्यादा काला है,
जिसकी धुलाई करने से भी साफ नहीं होता हैं।
ये अंधा कानून है।।

जो लोग कुछ भला करने के लिए सोचते हैं,
उनको पिंजरे में बंद कर दिया जाता है।
ये अंधा कानून है।।

नेता लोग हमेशा अखबार और टीवी में पब्लिसिटी मांगते हैं,
ताकि आम आदमी के सामने लोकप्रिय बन सके।
लेकिन उन्हें पता नहीं है कि समाज में उनसे भी
ज्यादा चतुर लोग होते हैं।
ये अंधा कानून है।।

रावण को मारने के लिए राम जी ने हनुमान की मदद ली थी
अभी इस अंधे कानून को रोकने के लिए किसकी मदद लूँ।।

प्लैटिनम जयंती मूर्ति

अमरदीप सिंह भाटिया, आई.ए.एस., अपर सचिव, वाणिज्य विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने रबड़ अधिनियम बनाए जाने के प्लैटिनम जयंती की स्मृति में कोट्टयम में रबड़ बोर्ड के मुख्य कार्यालय के सामने स्थापित मूर्ति का औपचारिक अनावरण किया।

रबड़ बोर्ड के 75 वर्षों के अनुकरणीय कार्य का भारत के कृषि, सामाजिक और आर्थिक इतिहास पर डाले प्रभाव को मूर्ति प्रकट करता है। इस्पात में बनवाए मूर्ति को इस तरह से रखा गया है कि संख्या 7 और 5 एक दूसरे से सटी हुई हैं। मूर्ति में अलग-अलग दिशाओं में बढ़ती हुई रबड़ की पत्तियां रबड़ क्षेत्र में हुई वृद्धि और लंबे समय तक चलने वाली रबड़ के उत्पादन को सूचित करता है। रबड़ को एक राष्ट्रीय फसल के रूप में आगे ले आने के लिए कड़ी मेहनत किए मजदूरों और कृषकों की हथेली भी इस मूर्ति में अंकित है।

स्टेनलेस स्टील, कॉंक्रीट, ग्रेनाइट आदि से बनाये गये इस मूर्ति का डिजाइन और निर्माण क्रिएटिव माइंड्स, कोट्टयम नामक संगठन के एस राधाकृष्णन और सहकर्मियों द्वारा किया गया था।

प्लैटिनम जयंती प्रदर्शनी

रबड़ अधिनियम बनाने की प्लैटिनम जयंती के सिलसिले में रबड़ बोर्ड द्वारा आयोजित समारोहों के हिस्से के रूप में कोट्टयम के माम्मन मापिला हॉल में आयोजित तीन दिवसीय प्रदर्शनी का उद्घाटन रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम वसंतगेशन आई.आर.एस. ने किया।

रबड़ का इतिहास, रबड़ क्षेत्र में हुए विकास और अब तक बोर्ड द्वारा हासिल उपलब्धियाँ आदि चालीस से अधिक स्टालों में लगायी गयी प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण था। विभिन्न प्रकार के रबड़ उत्पाद और उनके निर्माण की प्रणाली प्रदर्शित करने की व्यवस्था भी स्टालों में की गई थी। प्राकृतिक रबड़ का उपयोग किन-किन क्षेत्रों में किया जा सकता है और इसकी संभावना कितना अनंत हैं इसका खुलासा करना भी प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्यों में था।

रबड़ अनुसंधान केंद्र के विभिन्न प्रभागों द्वारा तैयार किए गए वीडियो को प्रदर्शनी हॉल में बड़ी स्क्रीन पर दिखाया गया, जो दर्शकों के लिए आकर्षण था। व्यायाम के लिए इस्तेमाल करने वाली अच्छी गुणवत्ता और निर्यात संभावना रखने वाले व्यायाम बैंड, प्राकृतिक रबड़ से बने फॉर्म, चिकित्सा दस्ताने और घरेलू दस्ताने आदि की प्रदर्शनी और विपणन भी प्रदर्शनी का हिस्सा था। तीन दिवसीय प्रदर्शनी के दौरान उत्पाद विनिर्माताओं, कृषकों, इतिहासखोजकारों और आम जनता आदि कई लोगों ने स्टालों का दौरा किया।

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, नई दिल्ली हिंदी को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक गैर सरकारी संगठन है, जो अखिल भारतीय स्तर पर केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। वर्ष 2022-23 के दौरान भी संगठन ने कर्मचारियों के लिए निबंध लेखन, टिप्पण एवं आलेखन सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया था। इन प्रतियोगिताओं में कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का प्रतिनिधित्व करते हुए सदस्य कार्यालयों के पदधारियों ने प्रतिभागिता की। हिंदीतर भाषी क्षेत्र के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिताओं के सभी तीन पुरस्कार कोट्टयम नराकास का प्रतिनिधित्व करने वाले कर्मचारियों द्वारा प्राप्त किए गए। टिप्पण और आलेखन प्रारूपण प्रतियोगिता का तीसरा पुरस्कार भी कोट्टयम नराकास के अधीन पदधारी को प्राप्त हुआ।

पुरस्कार विजेताओं की सूची

निबंध लेखन प्रतियोगिता

प्रथम - श्रीमती एस एस बिंदु, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान, रबड़ बोर्ड

द्वितीय - श्रीमती रश्मी कण्णन, भारतीय जीवन बीमा निगम

तृतीय - श्रीमती सी ई जयश्री, प्रयोगशाला सहायक, केंद्रीय काष्ठ परीक्षण प्रयोगशाला, रबड़ बोर्ड

टिप्पण एवं आलेखन

तृतीय - श्रीमती लीनाकुमारी एस, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1, रबड़ बोर्ड मुख्यालय

एस एस बिंदु

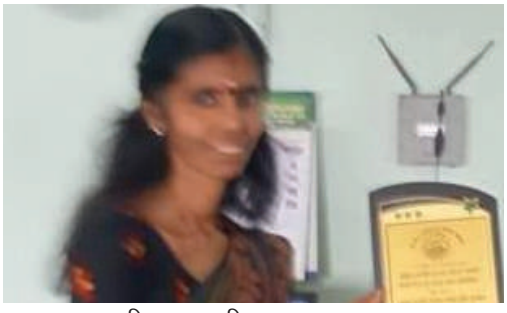

लीनाकुमारी एस

रश्मी कण्णन

सी ई जयश्री

हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी

संध्या देव
कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
प्रादेशिक कार्यालय, बिश्रामगंज

भारतवासी होने के नाते
कहती हूं मैं सबको नमन करके,
राष्ट्रभाषा में बात करना चाहिए
हम सबको हँसते हँसते
आंचलिक भाषा जो भी हो हमारी
ध्यान में ये रखना चाहिए,
हिंदी है हमारी राष्ट्रभाषा
सबको हिंदी अपनाना चाहिए।
बहुत भाषाओं का देश है हमारा
पर सोच में हम सब भारती।
सबको एक भाषा रूपी माला में बांधने के लिए
चुन ली गयी है हिंदी
भारत में ज्यादा बोलने वाली भाषा है हमारी हिंदी
हिंदी हैं हमारी भारत माता की बिंदी।

(कविता)

नवीन साय एस
सुपुत्र आदित्या सोमशेखरन पिल्लै
रबड़ बोर्ड प्रादेशिक कार्यालय, अड़ूर

बारिश

बारिश बारिश तुम मेरे दोस्त हो
मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूँ
मैं तुम्हारे घर आना चाहता हूँ
मैं हमेशा तुम्हें देखना चाहता हूँ
बारिश बारिश तुम मुझसे दूर मत जाओ
क्योंकि मुझे तुमसे प्यार है।

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 45वीं बैठक

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 45 वीं बैठक 25 जनवरी 2023 को तत्कालीन कार्यकारी निदेशक, डॉ के एन राघवन आई आर एस, अध्यक्ष नराकास एवं कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की उपस्थिति नहीं रही। सदस्य सचिव ने बैठक में भाग लिए अध्यक्ष एवं सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों/अधिकारियों का स्वागत किया। डॉ के.एन.राघवन, अध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का लक्ष्य राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन में सदस्य कार्यालयों द्वारा किये जा रहे कार्यकलाप अन्य कार्यालयों को भी अवगत कराना है। जिससे कार्यालयों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा संभव होगी। अध्यक्ष ने हमेशा की तरह यह भी दोहराया कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कार्यक्रमों को हमें ध्यान देना है और नराकास बैठकों में कार्यालय प्रमुखों की खुद की उपस्थिति अनिवार्य है। संसदीय समितियों के निरीक्षण के दौरान यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।

राजभाषा विभाग से प्रतिनिधि की अनुपस्थिति में श्री जी सुनीलकुमार, सहायक निदेशक (रा भा), रबड़ बोर्ड एवं सदस्य सचिव ने सदस्य कार्यालयों की अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्टो का अवलोकन किया। रिपोर्टों का अवलोकन करते हुए उन्होंने सुधारक उपायों पर भी सुझाव दिये।

बैठक के दौरान यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की गृह पत्रिका 'यूनियन अक्षरदीप' का विमोचन किया गया। श्री एम पी श्रीकुमार, हिंदी अनुवादक, भारत संचार निगम लिमिटेड ने कृतज्ञता ज्ञापित कीं।

- रबड़ समाचार

संयुक्त हिंदी सप्ताह/ संयुक्त हिंदी कार्यशाला

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में 10 जनवरी से 12 जनवरी 2023 तक नराकास के सदस्य कार्यालयों के पदधारियों के लिए विविध प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। बोर्ड के मुख्यालय और भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान से लगभग 37 प्रतिभागी भाग लिए। पदधारियों के लिए कुल 8 प्रतियोगिताएं (टिप्पण एवं आलेखन, निबंध लेखन, कवितापाठ, हिंदी गीत, आशुभाषण, स्मरण शक्ति परीक्षा, प्रश्नोत्तरी और समाचार वाचन) आयोजित कीं। पदधारियों के बच्चों के लिए 7 जनवरी 2023 को चार वर्गों में बांटकर विविध प्रतियोगिताएं आयोजित कीं।

इसके अलावा कोट्टयम नराकास के तत्वावधान में कोट्टयम स्थित केंद्र सरकार कार्यालयों/संगठनों के पदधारियों के लिए 10 जनवरी 2023 को अपराह्न 02.00 बजे 05.00 बजे तक एक संयुक्त हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इसमें बोर्ड के मुख्यालय से 10, भारतीय रबड अनुसंधान संस्थान से 6, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण प्रशिक्षण संस्थान से 2 पदधारी भाग लिए।

अंतिम पृष्ठ में छापने हेतु कर्मचारियों/कर्मचारियों के परिवार सदस्यों के रंगीन चित्र रचनाएं आमंत्रित है। स्वीकृत/प्रकाशित चित्रों को मानदेय दिया जाएगा।

संयुक्त हिंदी सप्ताह समापन समारोह

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में आयोजित संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह का समापन सम्मेलन 06 मार्च 2023 को रबड़ बोर्ड मुख्यालय में आयोजित किया। श्री पी के पद्मनाभन, वरिष्ठ प्रबंधक (सेवानिवृत्त), बी पी सी एल मुख्यातिथि रहे। उन्होंने राजभाषा के रूप में हिंदी के महत्व और इसकी आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ के एन राघवन आई आर एस, अध्यक्ष, कोट्टयम नराकास एवं कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने समारोह की अध्यक्षता की। सम्मेलन में संयुक्त हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों और विजेता बच्चों को पुरस्कारों से सम्मानित किया। समारोह में श्री पी वी जयकुमार, सहायक महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख, कैनरा बैंक ने आशिर्वचन दिया।

श्रीमती पी निषिता, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1, रबड़ बोर्ड के प्रार्थना गीत से सम्मेलन का शुभारंभ हुआ तथा श्री जी सुनीलकुमार, सदस्य सचिव ने अतिथियों को स्वागत किया। श्री एम पी श्रीकुमार, हिंदी अनुवादक, भारत संचार निगम लिमिटेड ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

रसोई घर

स्पाइसी मसाला बटर कॉन

आवश्यक सामग्री

1. उबले हुए मीठी मकई के दाने (स्वीट कॉर्न)
   - 2 कप (मकई को भाप में पका लें और एक-एक दाने निकाल लें)
2. मक्खन - 2 चम्मच्च
3. काली मिर्च - ½ चम्मच्च
4. लाल मिर्च का पाउडर - ½ चम्मच्च
5. चाट मासाला - ¼ चम्मच्च
6. नींबू का रस - 1 चम्मच्च
7. नमक - स्वादानुसार

विधिः एक पैन में मक्खन डालें और पैन ज्यादा गरम होने से पहले लाल मिर्च का पाउडर, काली मिर्च का पाउडर, चाट मसाला, नींबू का रस और स्वादानुसार नमक और उबले हुए मीठी मकई के दानें डालें। एक मिनिट के लिए अच्छी तरह मिक्स करें और गैस ऑफ करके तुरंत परोसें।

सेवानिवृत्तियां

जनवरी 2023

डॉ. एलिसबेथ के आई
अनुभाग अधिकारी

शशिकुमार के एम
अनुभाग अधिकारी

जोर्ज मात्यु
विकास अधिकारी

के एस लिल्लिकुट्टी
सहायक

फरवरी 2023

लक्ष्मी अम्माल पी
अनुभाग अधिकारी

अप्रैल 2023

शिवन के वी
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त

अनिताकुमारी के आर
अनुभाग अधिकारी

सिरियक सेबास्टियन
विकास अधिकारी

जोर्ज जोसफ
व. रबड़ टापिंग निदर्शक

आर जयन
क्षेत्रीय पर्यवेक्षक

मार्च 2023

कातरीन सी के,
अनुभाग अधिकारी

जयप्रकाश बी
सहायक सचिव

राजीव के पी,
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त

तपन लाल बैश्या
अनुभाग अधिकारी

माक्लिन एस मराक
सहायक सचिव

ज्योती एन
प्रभारी विकास अधिकारी

करुणा देब बर्मा
फील्ड मैन

अनिरुद्धन टी
व.रबड़ टापिंग निदर्शक

बदन चंद्र कचारी
सहायक

जयराजन पारायी
स्टाफ कार चालक

हिंदी साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. हिंदी साहित्य के इतिहास का प्रथम लेखक कौन है?

   (क) जॉर्ज ग्रियर्सन

   (ख) शिवसिंह सेंगर

   (ग) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

   (घ) गार्सां द ताँसी

2. अमीर खुसरो किस तरह की रचनाओं के लिए प्रसिद्ध रहे हैं?

   (क) पहेलियाँ-मुकरियाँ (ख) गजल

   (ग) गीत (घ) दोहे

3. 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' किस कवि की रचनाएँ हैं?

   (क) विद्यापति (ख) रामानंद

   (ग) नरपति नाल्ह (घ) अमीर खुसरो

4. शंकराचार्य ने सामाजिक एकीकरण के लिए किस दार्शनिक-आध्यात्मिक ऐक्य का निरूपण किया?

   (क) विशिष्टाद्वैत (ख) द्वैताद्वैत

   (ग) अद्वैत वेदांत (घ) शुद्धाद्वैत

5. 'मसि कागद छुयौ नहिं, कलम गह्यौ नहिं हाथ।' यह पंक्ति किस भक्त कवि को लक्ष्य करके कही गई है?

   (क) नानकदेव (ख) कबीरदास

   (ग) दादू दयाल (घ) रैदास

6. 'पद्मावत' का लेखक कौन है?

   (क) जायसी (ख) मंझन

   (ग) आलम (घ) उसमान

7. कबीर किसके शिष्य थे?

   (क) रामानुज (ख) रामानंद

   (ग) शंकराचार्य (घ) नानकदेव

8. तुलसीदासकृत 'विनयपत्रिका' की रचना किस भाषा में की गई है?

   (क) अवधी (ख) खडी बोली हिंदी
   (ग) ब्रजभाषा (घ) मैथिली

9. मीराबाई की भक्ति किस भाव की है?

   (क) वात्सल्य भाव (ख) माधुर्य भाव

   (ग) सख्य भाव (घ) दास्य भाव

10. हिंदी साहित्य में आधुनिक हिंदी साहित्य के सूत्रधार कौन हैं?

    (क) बालकृष्ण भट्ट

    (ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी

    (ग) भारतेंदु हरिश्चंद्र

    (घ) प्रतापनारायण मिश्र

उत्तर

1. (घ), 2. (क), 3. (क), 4. (ग), 5. (ख), 6. (क), 7. (ख), 8. (ग), 9. (ख), 10. (ग)

हिंदी दिवस समारोह

प्रादेशिक कार्यालय निलंबूर में 26 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री गोपालकृष्णन, हिंदी अध्यापक प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री सकीर वी ए , उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री गोपालकृष्णन वी सहायक विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से विविध प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैंः-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - सी के कातरीन, सहायक

द्वितीय - षैलजा के, क.सहा. ग्रेड 1

तृतीय - सुभाष के सी, सहायक

II. कवितापाठ

प्रथम - गोपालकृष्णन के, सहा. वि. अधिकारी

द्वितीय - अनिता एस, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - सुभाष के सी, सहायक

प्रादेशिक कार्यालय सांतिरबजार में 26 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री प्रदीपकुमार पी जी टी, केंद्रीय विद्यालय, बगाफा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से विविध प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैंः-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - अमित सिंह यादव, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - एस एन सत्पती, सहा. वि. अधिकारी

तृतीय - राहुल हालडेर, क्षेत्रीय अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - एस एन सत्पती, सहा. वि. अधिकारी

द्वितीय - अमित सिंह यादव, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - बब्लू देबनाथ, क्षेत्रीय अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय पुत्तूर में 30 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती नव्या, हिंदी अध्यापिका, गर्वमेंट जूनियर कॉलेज, कोंबेट्ट, पुत्तूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री सुरेष डी, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैंः-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - शांती एस, क. सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - ज्योत्सना के, क. सहायक ग्रेड 1

तृतीय - सतीशा नायिक डी, अनुभाग अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - शांती एस, क. सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - ज्योत्सना के, क. सहायक ग्रेड 1

तृतीय - सतीशा नायिक डी, अनुभाग अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय तोडुपुषा में 15 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री षाजी मोल एम के प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री षाजु वी पोल, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैंः-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - रम्या एम आर, कनिष्ठ सहायक

द्वितीय - सुनिलकुमार पी आर, सहायक

तृतीय - नैसी तोमस, क्षेत्रीय अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - सालिकुट्टी जोसफ, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - निषा ए पिल्लै, क. सहायक ग्रेड 1

तृतीय - रम्या एम आर, कनिष्ठ सहायक

प्रादेशिक कार्यालय पालक्काड में 30 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री एन सोमसुंदरम, सेवानिवृत्त एच एस एस अध्यापक प्रतियोगिताओं में निर्णायक और मुख्य अतिथि रहे। श्री के मुरली, प्रभारी उप रबड़ उथ्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - प्रीता के, सहायक

द्वितीय - सेतु के, अभिलेखपाल

तृतीय - सुमती के बी, क. सहा. ग्रेड 1

II. भाषण

प्रथम - षीजा ए एन, क. सहा. ग्रेड 1

द्वितीय - प्रीता के, सहायक

तृतीय - सुमती के बी, क. सहा. ग्रेड 1

III. कवितापाठ

प्रथम - रजनी पी, सहायक

द्वितीय - षीजा ए एन, क. सहा. ग्रेड 1

तृतीय - प्रीता के, सहायक

प्रादेशिक कार्यालय कोषिक्कोड में 30 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस मनाया गया। श्री संतोष वी जी, उप रबड़ उत्पादक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री सुनीलकुमार, हिंदी अध्यापक, पंतीरामकाव हायर सेकंडरी स्कूल प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे।

इस सिलसिले में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - टी के वल्सराजन, क.सहा. ग्रेड 1

द्वितीय - ताज वी एम, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - षबीर सी, क. सहायक ग्रेड 1

II. कवितापाठ

प्रथम - आन्स मात्यु, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - षबीर सी, क. सहायक ग्रेड 1

तृतीय - ताज वी एम, क्षेत्रीय अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय कांजंगाड में 27 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस मनाया गया। श्री बालन एम, अध्यापक, दुर्गा हायर सेकेंडरी स्कूल, कांजंगाड प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे । इस सिलसिले में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - अभिलाष टी, क. सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - मोहनदास वी के. सहायक ग्रेड 1

तृतीय - रतीष सी, स.वि. अधिकारी

II. भाषण

प्रथम - अभिलाष टी, क. सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - प्रभावती के, सहा. वि. अधिकारी

तृतीय - मोहनदास वी के. सहायक ग्रेड 1

III. कवितापाठ

प्रथम - अभिलाष टी, क. सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - मोहनदास वी के. सहायक ग्रेड 1

तृतीय - अनिलकुमार वी, क्षेत्रीय अधिकारी

आंचलिक कार्यालय, श्रीकंठापुरम में 26 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती जयंती, एच एस ए हिंदी, के पी सी एच एस एस पट्टनूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री षाजु वर्गीस ए ए, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

इस सिलसिले में पदधारियों के लिए विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - आन्सी टी के, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - ओमना के के, सहायक

तृतीय - चंद्रलेखा के, सहा. वि. अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - संध्या पी आर, क.सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - ओमना के के, सहायक

तृतीय - श्यामला टी ए, अनु. अधिकारी

III. भाषण

प्रथम - चंद्रलेखा के, सहा. वि. अधिकारी

द्वितीय - संध्या पी आर, क.सहायक ग्रेड 1

तृतीय - आन्सी टी के, क्षेत्रीय अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय, मैंगलूर में 26 सितंबर 2022

को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। डॉ पी वी शोभा, व्याख्याता हिंदी, सेंट आग्नस पी यू कॉलेज मैंगलूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती षीजा टी पी, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस सिलसिले में पदधारियों के लिए विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - रोशनी पी, सहा. वि. अधिकारी

द्वितीय - होजिरे मंगला सबप्पा,अनु.अधिकारी

तृतीय - मिनि नैनान, स.विकास अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - रोशनी पी, सहा. वि. अधिकारी

द्वितीय - मोहनदास के, विकास अधिकारी

तृतीय - षीजा टी पी, उ.र.उत्पादन आयुक्त

प्रादेशिक कार्यालय अगिया में 27 सितंबर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। करण कंठ रे, हिंदी अध्यापक प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - आनंद लामा, सहा. वि. अधिकारी

द्वितीय - बिमल चंद्रनाथ, सर्वे. अधिकारी

तृतीय - महेंद्र पुंडलिक पथारे, अनु. अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - महेंद्र पुंडलिक पथारे, अनु. अधिकारी

द्वितीय - रेखा महातो, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - किशोर कुमार कालिता, क.सहायक
बिमल चौधरी नाथ, सर्वे. अधिकारी

अंतिम पृष्ठ का चित्र : चित्रकारी श्रीमती टी एम वर्षा, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1, प्रादेशिक कार्यालय, तलश्शेरी श्रीमती वर्षा ने अपनी चित्र रचनाओं की प्रदर्शनी का भी आयोजन किया है।

चिकित्सा : शरीर विज्ञान नोबेल पुरस्कार

फिलिप शार्प

पुरस्कार वर्ष : 1993
जन्म : 6 जून, 1944
राष्ट्रीयता : अमरीकी

फिलिप शार्प अमरीकी वैज्ञानिक हैं। इन्हें 1993 का नोबेल पुरस्कार दिया गया। इनके दूसरे भागीदार थे ब्रिटेन के रिचर्ड राबर्ट्स। परंतु इन दोनों ने कार्य स्वतंत्र रूप से किया। इनके अनुसंधान को स्प्लिट जीन्स के नाम से पुकारा जाता है। इस अनुसंधान से जीव विज्ञान के मौलिक अनुसंधान में भारी परिवर्तन आया है। यह खोज इन्होंने 1977 में की थी। इनकी इस खोज ने कि जीन्स अनेक खंडों में बना है, जीव विज्ञान संबंधी सारे ढांचे को ही बदल कर रख दिया।

रिचर्ड राबर्ट्स

पुरस्कार वर्ष : 1993
जन्म : 12 नवंबर 1948
राष्ट्रीयता : ब्रिटिश / अमरीकी

रिचर्ड राबर्ट्स हैं तो इंग्लैंड के परंतु काम अमरीका में ही कर रहे हैं। इन्हें 1993 का मेडिसन में नोबेल पुरस्कार भागीदार के रूप में मिला। जब इन्हें जीन के अनेक खंडों में बने होने की बात का पता चला तो वैज्ञानिकों को भारी आश्चर्य हुआ। इस बात का पता उस समय लगा जब यह गले की ग्रंथी के उस वायरस का अध्ययन कर रहे थे जिससे सामान्य जुकाम हो जाता है। जीन्स के विभिन्न खंडों को एक्सोन्स और इन्ट्रोन्स कहते हैं।

एडवर्ड बी लेविस

पुरस्कार वर्ष : 1995
जन्म : 20 मई 1918
मृत्यु : 21 जुलाई 2004
राष्ट्रीयता : अमरीकी

शरीर विज्ञान में 1995 का नोबेल पुरस्कार पाने वाले तीन व्यक्तियों में से लेविस अमरीकी हैं और कैलिफोर्निया की तकनीकी संस्था में काम करते हैं। इनके कार्य का मुख्य क्षेत्र जीन है। इन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि गर्भ में किस प्रकार जीन द्वारा मानव कक्रिस्टीन न्युसलीन-वोल्हाडा है।क्रांतिकारी कार्य हुआ।

क्रिस्टीन न्युसलीन-वोल्हाड

पुरस्कार वर्ष : 1995
जन्म : 20 अक्तूबर 1942
राष्ट्रीयता : जर्मनी

यह जीव विज्ञान की पंडिता हैं और मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट फॉर डेवलपमेंट बायोलॉजी की डायरेक्टर हैं। इस वर्ष के तीनों जीन विज्ञानियों ने उस प्रक्रिया का पता लगाया है जो गर्भ में आरंभिक जीव के विकास को नियंत्रित करती है। इससे मानव में जन्मजात विकृति की व्याख्या करने में सहायता मिलेगी। यह पहली जर्मन महिला हैं जिन्हें यह पुरस्कार मिला।

एरिक एफ वाइखॉस

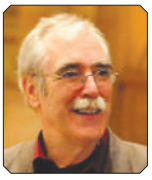

पुरस्कार वर्ष : 1995
जन्म :8 जून 1947
राष्ट्रीयता : अमरीकी

शरीर विज्ञान में 1995 का पुरस्कार प्राप्त करने वाले यह तीसरे व्यक्ति हैं। यह अमरीका के हैं और प्रिंस्टन विश्वविद्यालय से संबंधित हैं। इनका सहयोग भी जीन से संबंधित है। इन्होंने परीक्षण के लिए फलों की मक्खी पर प्रयोग किये। जीव विज्ञान के छात्र इस प्रकार के प्रयोग से परिचित हैं।

पीटर सी दोहेर्ती

पुरस्कार वर्ष : 1996
जन्म : 15 अक्तूबर 1940
राष्ट्रीयता : आस्ट्रेलियन

दोहेर्ती ने इस बात का पता लगाया कि मानव-शरीर की प्रतीक्षात्मक प्रणाली किस प्रकार विषाणुओं की पहचान कर उन्हें नष्ट करने की दिशा में क्रियाशील होती है। इस खोज से कैंसर, गठिया आदि जैसे दुःसाध्य रोगों के उपचारार्थ उपाय किए जा सकेंगे। यह पुरस्कार इसी खोज के लिए एक अन्य वैज्ञानिक को भी दिया गया।

राजभाषा सम्मेलन 2023 - पुरस्कार वितरण

Penta Offset, KTM. 0481-2583959